नजयग [नज्यगा विपुलभुजा H. 2. 125] विपुलभुजा.

ननगग [निगौ निलया (ननना गो निलया) H 2. 115.] निलया.

नरजग (6-4) [नरजगैर्भवेन्मनोरमा शास्त्रसागरैः 'Ckau. 10. 344] मनोरमा.

भतनग [भत्नगा मृगचपला H. 2. 122] मृगचपला, सुरदयिता.

भनमग [भ्नौ मृगौ बन्धूकम् H. 2. 118] बन्धूक.

भभभग [भत्रितयाद्रिति चित्रगतिः Jk. 2. 89] चित्रगति, दोधक, वृत्त, सारवती.

भभमग [भौ मगुरू यदि बन्धूकाख्यम् Jk. 2. 91] बन्धूक.

भमजग [दीपकमाला भो मजौ गुरुः Vr. 3. 28. 2] दीपकमाला.

भमतग [दीपकमाला चेद् द्वौ भ्मौ तगौ Vr. 3. 28. 3] दीपकमाला.

भमनग [भमनगैर्वृत्तसमृद्धा Bh. 32. 204] वृत्तसमृद्धा.

भमसग (5-5) [रुक्मवतीयं भाति भमस्गैः (शरैर्बाणैर्यतिः) Jk. 2. 86] चम्पकमाला, पुष्पसमृद्धि, रुक्मवती, रूपवती, सुभावा.

मनजग [म्नौ ज्गौ चेति पणवनामकम् Vr. 3. 28. 5] पणव.

मननग [मो नौ गः कुमुदिनी H. 2. 123] कुमुदिनी, कुसुमसमुदिता.

मनयग (3-7) [मान्न्यौ गः पणवकमाह ज्ञः Jk. 2. 85] कुवलयमाला, पणव.

मभनग (4-6) [हंसी मभनगैः प्रोक्ता यतिर्वेदैर्गुहाननैः Mm. 13. 4] हंसी.

मभभग (4-6) [हंसक्रीडा मभभा गयुताः Jk. 2. 95] हंसक्रीडा.

मभसग (4-6) [ज्ञेया मत्ता मभसगयुक्ता Vr. 3. 26] मत्ता, विलासिता.

मसजग [पङ्क्तौ शुद्धविराण्मसौ जगौ Jk. 2. 84] शुद्धविराट्.

मससग [मः सौ ग उद्धतम् H. 2. 124] उद्धत.

रजरग [स्यान्मयूरसारिणी रजौ गौं Jk. 2. 92] मयूरसारिणी.

रमसग [र्मस्गाः कलिका H. 2. 121.] कलिका.

रयजग (5-5) [मौक्तिकं रयौ चेज्जगोत्तरौ Jk. 2. 93] पङ्क्तिका, मौक्तिक, पथ्या, मरालिका.

रसजग [रसजगा लालिनी Mm. 20. 3] लालिनी.

रससग [रः सौ गो मणिरङ्गः H. 2. 117] माणिरङ्ग, मणिराग.

सजजग (5-5) [कमला स्यात् सजजगा विच्छिन्ना सायकैः शरैः Mm. 13. 10] कमला, संयुता.

सजसग [सूजसूगा माला H. 2. 126] प्रमिता, माला.

सतयग (5-5) [कलगीतं सतयगाः शरैर्बाणैर्यतिर्भवेत् Mm. 13. 7] कलगीत.

ससजग [ससजगा एकरूपम् Ind. Stu. VIII. p. 370] एकरूप.

ससगग [त्रिसगा अपि मेघवितानम् Vr. 3. 28. 8] मेघवितान, वितान.

ररग [रत्रयश्चेत् त्रयीनामकं गः अ० वृ० र०] त्रयी.

11 त्रिष्टुभ् (45)

जतजगग (5-6) [उपेन्द्रवज्रा जतजा गुरू चेत् Jk. 2. 116 (बाणर्तुभिर्यतिः) Mm.] उपेन्द्रवज्रा.

जरजगग [विलासिनी जूरौ ज्गौ गः P. 6. 26] विलासिनी.

जसतगग [उपस्थितमिदं जः सस्तगौ गः। वृत्तसार] उपस्थित, शिखण्डित.

जसयलग [जसयलगा सारिणी Rm. 5. 33] सङ्गता, सारिणी.

जसरगग [शिखण्डितमिदं ज्सौ रगौ गश्चेत् Vr. 3. 43. 2] शिखण्डित.

तजजगग [ताज्जौ ग्गुरुणैवमुपस्थिता स्यात् Jk. 2. 103] उपस्थिता.

तजजलग [स्यान्मोटनकं तजजाश्च लगौ P. 6. 15] मोटक, मोटनक.

ततजगग [स्यादिन्द्रवज्रा यदि तौ जगौ गः Chm. 2. 41] इन्द्रवज्रा.

तततगग [विध्वङ्कमाला भवेत्तौ तगौ गः। वृ० र० परि० 11. 293] लयग्राहि, विध्वङ्कमाला.

तननलग [तो नौ ल्गौ मुखचपला H. 2. 149] अभिहिता, मुखचपला.

तनरलग [तनरा लगौ उद्यता Bh. 32. 308] उद्यता.

तभजलग [तभजल्गा उत्थापनी H. 2. 148] उत्थापनी, विश्लोक.

नजजलग (5-6) [नजजलगैर्गदिता सुमुखी Vr. 3. 32 (पृषत्कऋतुभिर्यतिः)] द्रुतपादगति, सुमुखी.

नतनलग [असुविलासो नतनलगवः Vr. 3. 43. 5] असुविलास.

ननगग [ननगा गः दमनकम् Pp. 2. 109] दमनक.

ननलग [ननलगैर्दमनकम् Mu. 3. 133] दमनक.

ननरगग [कुपुरुषजनिता ननौ गौं गः Vr. 3. 43. 6] कुपुरुषजनिता.

ननरलग [नूनरलगयुतैव भद्रिका Jk. 2. 104] भद्रिका, अपरवक्त्र, सुभद्रिका (चान्द्रिका).

ननसगग [ननसगगुरुरचिता वृन्ता Vr. 3. 40] चित्रा, वृत्ता, वृत्ताङ्गी, वृन्ता, पृथ्वी.

नयनलग [न्यनलगाः कमलदलाक्षी H. 2. 150] कमलदलाक्षी, रुचिरमुखी.

नयभगग (6-5) [अनवसिता न्यौ भ्गौ गुरुरन्ते Vr. 3. 43. 8] अनवसिता, पतिता, श्री, माणिक्यमाला.

नयसगग [नयसगा गः Br. Saṅhitā 33. 29; 35. 8] —The same as above.

नररलग (6-5) [राजहंसी नरौ रो ल्गौ यतिः स्याद्दृतुसायकैः Mm. 9. 11.] राजहंसी, विभूषणा.

नसनगग [नस्ना गावशोका H. 2. 152] अशोका, गतविशोका.

भतनगग (5-6) [स्यादनुकूला भतनगगाश्चेत् Chm. 2. 11. 8] अनुकूला, प्रत्यबोध, मौक्तिकमाला, श्री, कुड्मलदन्ती, रुचिरा, सान्द्रपद, भद्रपद.

भतनगल [सान्द्रपदं भ्तौ नगलघुभिश्च Ckau.] सान्द्रपद.